

| <b>MEDIENID</b> | <b>Track</b> | <b>Titel</b>                           | <b>Interpret</b>    | <b>Jahr</b> | <b>ID</b> | <b>TITELID</b> | <b>Interprtet Unique ID</b> |
|-----------------|--------------|--|---------------------|-------------|-----------|----------------|-----------------------------|
| 76.490          | 1            | Wer recht in Freuden wandern will      | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.748 | 849.332        | 626.199                     |
| 76.490          | 2            | Alle Vögel sind schon da               | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.757 | 849.333        | 626.199                     |
| 76.490          | 3            | Im Krug zum grünen Kranze              | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.733 | 849.330        | 626.199                     |
| 76.490          | 4            | Es wollt ein Reiter jagen              | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.805 | 849.339        | 626.199                     |
| 76.490          | 5            | Das Lieben bringt groß Freud           | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.774 | 849.335        | 626.199                     |
| 76.490          | 6            | Muß i denn zum Städtele hinaus         | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.798 | 849.338        | 626.199                     |
| 76.490          | 7            | Nun ade, du mein lieb Heimatland       | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.789 | 849.337        | 626.199                     |
| 76.490          | 8            | Bin ein fahrender Gesell               | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.742 | 849.331        | 626.199                     |
| 76.490          | 9            | Mein Vater war ein Wandersmann         | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.812 | 849.340        | 626.199                     |
| 76.490          | 10           | Wem Gott will rechte Gunst erweisen    | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.766 | 849.334        | 626.199                     |
| 76.490          | 11           | Der Mai ist gekommen                   | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.725 | 849.329        | 626.199                     |
| 76.490          | 12           | Wohlauf, die Luft geht frisch und rein | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.820 | 849.341        | 626.199                     |
| 76.490          | 13           | Ein Jäger aus Kurpfalz                 | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.782 | 849.336        | 626.199                     |
| 76.490          | 14           | Das Wandern ist des Müllers Lust       | Anheisser, Wolfgang |             | 5.221.717 | 849.328        | 626.199                     |